सामाजिक वानिकी एवम पारि–पुनर्स्थापन केन्द्र, इलाहाबाद
Centre for Social Forestry and Eco-Rehabilitation

दिनांक 04.12.2013 को सामाजिक वानिकी एवं पारि–पुनर्स्थापन केन्द्र इलाहाबाद द्वारा सारनाथ वन विश्राम भवन परिसर, वाराणसी में किसान मेला का आयोजन किया गया। इस आयोजन में मुख्य अतिथि श्री एस. एन. सिंह डी. एफ. ओ. वाराणसी थे। आयोजन में विशिष्ट अतिथि डा. वी. के. जोशी, प्रमुख द्रव्य गुण विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय थे। अन्य अतिथि गणों में डा. आर. बी. राम, गन्ना विकास अधिकारी, डा. एस. एन. एस. चौरसिया, डा. आर. एन. प्रसाद, डा. आर. बी. यादव, डा. टी. डी. लाम्बा, वैज्ञानिक, सब्जी अनुसंधान संस्थान वाराणसी ने भी कार्यक्रम में भाग लिया।

सामाजिक वानिकी एवं पारि–पुनर्स्थापन केन्द्र, इलाहाबाद की निदेशक डा. कुमुद दूबे ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का कार्यक्रम में स्वागत किया। केन्द्र के डा. अनिता तोमर, डा. अनुभा श्रीवास्तव तथा डा. एस. डी. शुक्ला ने किसानों को मुख्यतः सामाजिक वानिकी, औषधीय पौधों के बारे में जानकारी दी तथा किसानों को पौधे लगाने के लिए प्रेरित किया गया। इस मेले मे हरियाली से खुशहाली की चेतना भी भरी गई।इस मेले में कई गॉवों के किसान शामिल थे मेले में 100 से अधिक किसानों ने पंजीकरण कराया तथा सभी पंजीकृत किसानों को यूकेलिप्टस, बॉस और बकैन के बीज आवश्यक पैम्फलेट एवं छपी हुई सामग्री निःशुल्क वितरित की गई।

किसान मेले में कृषकों को जानकारी देने हेतु उत्तर प्रदेश के विभिन्न स्थानों से यथा वन विभाग वाराणसी, द्रव्यगुण विभाग, आयुर्वेद संकाय चिकित्सा विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, सूर्या फार्मास्यूटिकल लंका, नगवा, वाराणसी, पेस संस्थान वाराणसी, शिवम ग्रामोद्योग, फूलपुर, साई ग्रामीण अनुसंधान संस्थान, सामाजिक वानिकी एवं पारि–पुनर्स्थापन केन्द्र, आदि ने वाराणसी किसान मेले मे प्रदर्शन स्टाल लगाया तथा सम्बंधित साहित्य भी उपलब्ध कराये गये। प्रदर्शन स्टालों को प्रथम पुरस्कार वन विभाग वाराणसी, द्वितीय पुरस्कार द्रव्यगुण विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, तृतीय पुरस्कार सूर्या फार्मास्यूटिकल तथा सांत्वना पुरस्कार पेस संस्थान को दिया गया।

मेले के समापन सत्र में उपस्थित किसानों ने विशेष चर्चा में भाग लिया और अपनी समस्यायें तथा उसके निदान के बारे में जानकारी ली। मेले के समापन सत्र में मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि ने किसानों के सामने अपने अनुभव व्यक्त किये। मेले में लगी लाभकारी प्रदर्शनियों की सराहना की गयी और प्रोत्साहन धनराशि तथा प्रमाण पत्र वितरित किये।

किसान मेले की आयोजन अध्यक्ष डा. कुमुद दबे, आयोजक सचिव डा. अनिता तोमर, और कार्यक्रम संचालनकर्ता डा. अनुभा श्रीवास्तव थीं। मेले के सफल आयोजन में श्री ए. के. श्रीवास्तव, डा. शिव महेन्द्र सिंह, श्री आलोक पाण्डेय, श्री वरून कुमार मौर्य, श्री आशुतोष कुमार, श्री संदीप कुमार त्रिपाठी, श्री प्रवीण कुमार त्रिपाठी, श्री आशीष पाण्डेय एवं श्री तरूण श्रीवास्तव का विशेष योगदान रहा।

श्री कान्थाराज जूड सेखर, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद और डॉ पी. पी. भोजवेद, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून के निर्देशन एवं सौजन्य से सामाजिक वानिकी एवं पारि–पुनर्स्थापन केन्द्र, इलाहाबाद द्वारा पॉचवें किसान मेले का सारनाथ, वाराणसी में सफल आयोजन किया गया।

विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित प्रेस विज्ञप्ति

Times of India (Varanasi) 30.11.2013

Farmers to be trained to use land under guava trees

Navodita Mishra | TNN

Varanasi: The farmers owning orchards will be taught to increase their profit by utilising the land under the trees in the orchards to cultivate medicinal plants.

Kisan Mela organising secretary Anita Tomar said that a mela is to be held on December 4 at Sarnath. The one-day event will see experts from the fields of agro and social forestry impart knowledge to the cultivators of guava and madhuca (mahua) regarding the methods and techniques needed to grow plants with medicinal value under the trees.

"The land under the guava and maduca trees can used for the cultivation of medicinal plants as the amount of sunlight such plants require will be met even under the canopies of these trees. This will provide an additional way of earning to the orchard owners as medicinal plants fetch good price," observed Tomar. She is presently working as a scientist at the Centre for Social Forestry and Eco-Rehabilitaion, Allahabad. "This system of cultivation has already been implemented in some areas of Kaushambi district," she added.

The experts will also address the queries of the farmers and share with them advanced techniques of farming. The farmers will also be told how to go about cultivating advance varieties of trees with commercial value like poplar, eucalyptus, bamboo etc. The seeds of the advance breeds of these trees will be distributed free

The experts will also address the queries of the farmers and share with them advanced techniques of farming. The farmers will also be told how to go about cultivating advance varieties of trees with commercial value like poplar, eucalyptus, bamboo etc. The seeds of the advance breeds of these trees will be distributed free.

"Advance breed of poplar, a valuable commercial cultivation in western UP and now gaining popularity in eastern regions of the state also, will be mature enough in its widths and height within a period of three to four years, can be cut and sold for a significant profit. For trees of normal breed of poplar, the maturity period is more than six years. Thus, in long run, for every two cultivation of the normal breed of the tree, the advance breed can be cultivated thrice, which means that the one entire consignment will be additional," she explained.

According to the reports from divisional forest office a seminar will be held on December 4, the proposed Kisan Mela Day to discuss the current status of the state bird of UP, saras crane (Grus Antigone). Also a strategy for its conservation will be put forward during the seminar.

दौनिक जागरणा (वाराणसी) 05.12.2013

औषधीय खेती के लिए किसानों में भरी प्रेरणा

किसान मेला में स्टालों का निरीक्षण करते लोग। -जागरण

वाराणसी : सारनाथ स्थित मूलगध कुटी विहार पार्क में बुधवार को सामाजिक वानिकी एवं पारि पुनर्स्थापन केंद्र की ओर से किसान मेले का आयोजन किया गया। काफी संख्या में किसानों भाग लिया। स्टाल-स्टाल घूमे और जानकारी ली।

इस दौरान किसानों को औषधीय खेती के प्रति प्रेरित किया गया। कहा गया कि किसान खेती के साथ ही औषधीय पौधों की भी खेती कर सकते हैं। इससे उनकी आर्थिक स्थिति और मजबूत होगी। 'हरियाली से खुशहाली' की चेतना भी भरी गई।

लगे स्टाल : मेले में आंवला, खैर, बबूल, बांस एवं आचार-मुरब्बा के स्टाल लगाए गए थे। किसानों को औषधीय बीजों की जानकारी दी गई। मेले में कई गांवों के किसान शामिल थे।

सहजन का पौधा भी लगाएं : मुख्य अतिथि जिला प्रभागीय वनाधिकारी एसएन सिंह सहजन का पौधा लगाने के लिए सभी का आह्वान किया। बताया कि इसमें 12 तरह के विटामिन पाए जाते हैं। सहजन का फल स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। उप प्रभागीय वनाधिकारी सीएम त्रिपाठी ने भी औषधीय पौधों की खेती के प्रति प्रेरणा भरी।

गन्ना विकास अधिकारी डा. आरबी राम सहित वीके जोशी, केंद्र निदेशक डा. कुमुद दुबे, डा. सत्येंद्र देव शुक्ला आदि ने विचार व्यक्त किए। संचालन डा. अनुभा श्रीवास्तव व धन्यवाद ज्ञापन मनमोहन मिश्रा ने किया।

पिछैती बोआई में गेहूं की ये प्रजातियां लाभकारी

- बीएचयू से जुड़े कृषि विशेषज्ञ की सलाह ले रहे किसान

वाराणसी : रबी के मौसम में उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक क्षेत्रफल में गेहूं की बोआई की जाती है। हालांकि नमी की उपलब्धता के अनुरूप विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग समय पर बोआई होती है। वैसे गेहूं की बोवाई का वक्त निकल चुका है। ऐसी दशा में यदि गेहूं की उपयुक्त प्रजातियों का चयन करके बोआई की जाए तो पिछैती के दंश का अधिक असर किसान को नहीं झेलना पड़ेगा और उत्पादन भी पर्याप्त।

बीएचयू के दक्षिणी परिसर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के कार्यक्रम समन्वयक डा. श्रीराम सिंह प्रजातियों की जानकारी देते हैं और कहते हैं कि किसान विलंब होने की दशा में बोआई के लिए इन प्रजातियों का चयन कर प्राप्त कर सकते हैं।

असिंचित क्षेत्र में : डा. सिंह कहते हैं जहां सिंचाई की सुविधा नहीं हो वहां गेहूं की के 8962 (इंद्रा) की बोआई उचित है। औसत उपज 25-35 कुंतल प्रति हेक्टेयर है तथा 90-110 दिन में फसल पक कर तैयार हो जाती है। इसी कड़ी में के 9465 (गोमती) प्रजाति की औसत उपज 30-35 कुंतल प्रति हेक्टेयर है जो 90-110 में पक जाती है।

सिंचित क्षेत्र में: डा. सिंह के अनुसार सिंचित क्षेत्र में गेहूं की के 9162 (गंगोत्री) उचित है। औसत उपज 25-40 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा यह 110-115 में तैयार हो जाती है। के 9533 (नैना) की उपज 35-45 कुंतल प्रति हेक्टेयर है तथा यह 105-110 दिन में पक जाती है। के 9423 (उन्नत हलना) प्रजाति की उपज 35-45 कुंतल प्रति हेक्टेयर है तथा यह 85-90 दिन में तैयार हो जाती है। के 424 (गोल्डेन हलना) की उपज 40-45 कुंतल प्रति हेक्टेयर है और यह प्रजाति 85-90 दिन में पक जाती है।

कुछ इस तरह करें बोआई : डा. सिंह के अनुसार इन प्रजातियों की बोआई के लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी 15-18 सेमी एवं 4-5 सेमी गहराई होनी चाहिए। नमी पर्याप्त होनी चाहिए। बोआई से पहले फंफूद नाशक से बीज का शोधन करना लाभकारी होगा।

30 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से गंधक, 80:40:40 किग्रा प्रति हेक्टेयर नत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाश का उपयोग लाभकारी होगा।

अमर उजाला 05.12.2013

हरियाली के बिना खुशहाली असंभव

बीएचयू आयुर्वेद विभाग के स्टाल से जानकारी लेते लोग।

सारनाथ। मूलगंध कुटी विहार परिसर में बुधवार को लगे किसान मेले में उपजाऊ जमीन पर अधिक से अधिक फसल उगाने के बारे में जानकारी दी गई। लोगों को पौधे लगाने के लिए भी प्रेरित किया गया। डीएफओ एसएन सिंह ने कहा कि हरियाली के बिना जीवन में खुशहाली नहीं आ सकती है। एग्रो फारेस्ट्री मॉडल के तहत सागौन, यूकेलिप्टस पौधे लगाने से लाभ होगा। डा. आरबी राम ने कहा कि वृक्ष लगाना सभी का कर्तव्य है। मनमोहन मिश्रा, झगड़ू भैया, कुंवर सिंह ने कविता, गीत के माध्यम से पर्यावरण के बारे में जानकारी दी।

स्वागत समारोह

सामाजिक वानिकी एवम् पारि-पुनर्स्थापन केन्द्र, इलाहाबाद
Centre for Social Forestry and Eco-Rehabilitation, Allahabad
(Indian council of Forestry Research and Education, Dehradun)
Ministry of Environment and Forests, Government of India, New Delhi
04 12 2013

किसान मेला
कृषकों के आर्थिक विकास में सामाजिक वानिकी की भूमिका
दिनांक-4 दिसम्बर 2013
आयोजन स्थल-सारनाथ वन विश्राम भवन परिसर,वाराणसी
आयोजक-
सामाजिक वानिकी एवं पारि-पुनर्स्थापन केन्द्र, इलाहा
3/1 लाजपत राय रोड,नया कटरा,इलाहाबाद,पिन-211002
(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्,देहरा
(वन एवं पर्यावरण मंत्रालय,
04 12 2013

किसान मेला
कृषकों के आर्थिक विकास में सामाजिक वानिकी की भूमिका
दिनांक–4 दिसम्बर 2013
आयोजन स्थल–सारनाथ वन विश्राम भवन परिसर,वाराणसी
सामाजिक वानिकी एवं पारि–पुनर्स्थापन केन्द्र,इलाहाबाद

04 12 2013

04 12 2013

प्रदर्शनी का उद्घाटन

04 12 2013

04 12 2013

04 12 2013

मेले में प्रदर्शित स्टाल

04 12 2013

SHIVAM
04 12 2013

द्रव्यगुण विभाग
DEPT. OF DRAVYAGUNA
BANARAS HINDU UNIVERSITY
04 12 2013

समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण

CSFER

CSFER

CSFER

CSFER

CSFER
ALLAHABAD

CSFER
ALLAHABAD

CSFER

04 12 2013